गांधीवादी विचारधारा का हिंदी काव्य पर प्रभाव

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भारतवासी बापू के नाम से पुकारते थे। उनके नेतृत्व में भारत को आजादी मिली। उन्होंने राजनीति में सत्य और अहिंसा का समावेश किया। अहिंसात्मक तरीके से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की। इस प्रकार उन्होंने विश्व के सम्मुख एक नया आदर्श प्रस्तुत किया।

महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनका जन्म 2 अक्टूबर सन 1869 को काठियावाड़ की रियासत पोरबंदर में हुआ था। आपके पिता पोरबंदर रियासत में दीवान थे। माता का नाम पुतलीबाई था। उनकी माता धार्मिक विचार के महिला थी। माता के धार्मिक जीवन का प्रभाव गांधीजी के जीवन पर अत्यधिक पड़ा। गांधीजी के प्राथमिक शिक्षा पोरबंदर में हुई 18 वर्ष की अवस्था में हाईस्कूल उत्तीर्ण करके वह विलायत पढ़ने के लिए चले गए। विदेश जाते समय माताजी ने उनसे वचन लिया था कि वह विदेश में रहकर मांस और मदिरा का सेवन नहीं करेगा तथा वहां महिलाओं के साथ विशेष संपर्क नहीं बढ़ाएगा। मोहनदास ने अपने वचन का पालन पूरी सच्चाई के साथ किया। बैरिस्टरी पढ़कर वह 1898 में भारत वापस आए और मुंबई में वकालत करने लगे। सन 1911 में एक मुकदमे के सिलसिले में बैरिस्टर मोहनदास को दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने देखा कि काले रंग वाले व्यक्तियों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक समझा जाता था और इस नाते गोरे लोग अश्वेत (काले) लोगों के प्रति अमानवीय व्यवहार करते थे। अनेक सार्वजनिक स्थानों के बाहर इस प्रकार लिखा रहता था - " Dogs and Indians are not allowed’’ अर्थात “कुत्तों और भारतीयों का प्रवेश निषिद्ध है।"

गांधीजी इसे सहन नहीं कर पाए और उन्होंने इसका विरोध किया। इस विरोध में उनके साथ अनेक लोग भी शामिल हो गए। दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले और अश्वेत को कई मानवीय अधिकार प्राप्त हो गए। एक सत्याग्रही के रूप में गांधीजी का नाम कई देशों में फैल गया। दक्षिण अफ्रीका से उनके सत्याग्रह की शुरुवात ही गयी। और वे अंतिम समय तक सत्याग्रही बने रहे। गांधीजी ने देश-सेवा के साथ हिंदू-मुस्लिम एकता, अछूतों का उद्धार, ग्राम सुधार, स्वदेशी, खादी प्रचार हेतु कठोर परिश्रम किया। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय,अपरिग्रह आदि विचारों से उन्होने समाज में नैतिकता लाने का प्रयास किया। अपने भारतवर्ष की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सभी समस्याओं का समाधान किया। जब भी गांधीजी को संघर्ष की आवश्यकता महसूस होती थी, तब वे शुद्धि के लिए उपवास रखते थे। आप एक युग पुरुष थे। उनके इन सारे विचारों का प्रभाव हिंदी साहित्य पर स्पष्टतया दिखाई देता है। उनसे अनेक साहित्यकार प्रेरित हुए और उन्होने अपने साहित्य में गाधीवादी विचारों को अभिव्यक्ति दी। अहिंसा की अभिव्यक्ति हिंदी कविता में इस प्रकार दिखाई देती है –

स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी भाषा की विशेष भूमिका रही है। देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य हिंदी ने ही किया। महात्मा गांधी ने हिंदी का पुरस्कार किया। उन्होने कहा कि 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।' इसलिए उन्होने हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित किया। गांधीजी से प्रेरित होकर बाबू भारतेन्दु अपने हिंदी भाषा के प्रेम को सुंदर अभिव्यक्ति प्रदान करते है –

"निजभाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत नहिय को मूल।"

चौधरी बद्रीनारायण उपाध्याय 'प्रेमघन' अंग्रेजी शासन के फुट और बेर भावों को समाज से नष्ट करने के लिए नवजागरण का संदेश देते हैं। उन्होने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से स्वदेश प्रेम का मनभावन आंदोलन चलाया। महात्मा गांधी के सत्य अहिंसा को अपनाते हुए स्वदेशी वस्तुओं के प्रति अनुराग जगाया है।

"ज्यों ज्यों चपल चरखा चलत

बैर फुट बढ़ाय भारत वासिनै जे छ्लत
प्रेमघन तिन मिलन लखि उनको हियों खलभलत "

ठाकुर गोपालशरण सिंह द्विवेदी युग में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनके राष्ट्रप्रेम से संबंधित गीतों में भारतीय जनता में प्राणशक्ति फूंकने की ताकत है। वे गांधीवादी विचारों से प्रभावित थे इसलिए गांधी युग में जो भी आंदोलन हुए वे सब इनकी रचनाओं में दृष्टिगत होते हैं। इसी दरमियान गांधीजी का असहयोग आंदोलन प्रारंभ हुआ। असहयोग का अर्थ है 'सहयोग ना देना।' गांधीजी का असहयोग आंदोलन सत्य का चमत्कारिक प्रयोग था। अन्याय का प्रतिकार और सत्कर्म के साथ मिलकर चलने का अच्छा प्रयोग था। तेजी से बढ़ता असहयोग आंदोलन देखकर ब्रिटिश शासन भी विचलित हुआ। इन्हीं को कवि ने शब्दबद्ध किया है –

"यद्यपि सर्वथा शांति और असहयोग का आंदोलन।
पर चंद्रोदय से वारिधि सा, विचलित हुआ ब्रिटिश शासन।"

भारत छोड़ो आंदोलन का स्वर भी अल्प समय में सर्वत्र गूंजने लगा। 'जगदालोक' में कवि लिखते हैं --

"भारत छोड़ो हुआ वाक्य वह,
स्वतंत्रता के रण का गीत
शीघ्र बन गया वह भारत की
विजय प्राप्ति का मंत्र पुनीत।"

ठाकुर गोपालशरण सिंह गांधीजी के अहिंसा का चित्रण इस प्रकार करते हैं–

"अहिंसा का कर दिव्य प्रयोग
चित में तुमने जो क्रांति
उसी के फलस्वरूप सुख मूल
प्राप्त हो सकती है चिरशांति।"

ठाकुर साहब की रचनाओं में राष्ट्रप्रेम भरा पड़ा है। उनकी राष्ट्रप्रेम संबंधी रचनाएं 'संचिता', 'जगदालोक', 'विश्वगीत' आदि में संग्रहित है। विशेष रूप में जगदालोक में राष्ट्रीय आंदोलन की गूंज सुनाई देती है।

सन 1917 से दलितों के सुधार के लिए प्रयत्न आरंभ हुए । इस महत्वपूर्ण कार्य में महात्मा गांधीजी का योगदान अनन्य साधारण है। दलितों के मसीहा डॉ बाबासाहेब आंबेडकर जी ने दलित उद्धार का बीड़ा उठाया। उन्हें गुलामगिरी से मुक्त करने का अभियान चलाया। द्विवेदी युग में जातीय श्रेष्ठता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन पर अमानवीय अत्याचार किए जाते थे। ठाकुर गोपालशरण सिंह की निम्न पंक्तियों में क्षोभभिव्यक्ति उजागर हुई है –

" दलित पतित पीड़ित मनुजों का अभूत्थान अपेक्षित है।
जगती की सुख शांति उसी पर सभी भांति अवलंबित थे।"

सुभद्रा कुमारी चौहान अल्पायु भोगी कवियत्री थी। उन्होंने मात्रा की दृष्टि से बहुत कम लिखा लेकिन जितना लिखा उतना हिंदी साहित्य की अलौकिक धरोहर है। उनके काव्य में अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचार एवं भारतीय वीरों द्वारा सशक्त जवाब को हृदयस्पर्शी शब्दों में व्यक्त किया है–

" हम हिंसा का भाव त्याग कर विजयी वीर अशोक बने।
काम करेंगे वहीं कि जिसमें लोक और परलोक बने।
किंतु आज स्वागत की धुन में

हमें नहीं कुछ भी परवाह
तुझ को पाकर दीन हीन भी
जिन को समझ रहा नरनाह"

सुभद्राकुमारी चौहान भी महात्माजी के अहिंसात्मक आंदोलन में अपनी श्रद्धा व्यक्त करती है। अहिंसा में पूर्ण विश्वास व्यक्ति करती हुई वह कहती है -

"हमारी प्रतिमा साध्वी रहे, देश के चरणों पर ही चढ़े।
अहिंसा के भावों में मस्त आज यह विश्व जीतना पड़े।
हम हिंसा का भाव त्यागकर विजयी वीर अशोक बनें।
काम करेंगे वही कि जिसमें लोक और परलोक बने।"

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में स्वतंत्रता की अभिलाषा, विद्रोह और बलिदान के स्वर एक साथ अभिव्यक्त हुए हैं। स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाने वाले गांधीजी तथा तिलक को कवयित्री याद करती है। उनके विचारों का प्रभाव सुभद्राकुमारी पर दिखाई देता है। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव इस तरह प्रस्फुटित हुआ है –

"तिलक लाजपत गांधीजी
बंदी कितनी बार हुए
जेल गए जनता ने पूजा
संकट में अवतार हुए
जेल! हमारे मनमोहन का
प्यारा पावन जन्म स्थान
तुझ में सदा तीर्थ मानेगा
कृष्ण भक्त यह हिंदुस्तान"

सियाराम शरण गुप्त गांधी जी के अहिंसा तत्त्व को अपनी कविता के माध्यम से इस तरह अभिव्यक्त करते है –

" हिंसा से शांत नहीं होता हिंसानल
हिंसा का है, एक अहिंसा ही प्रत्युत्तर।"

माखनलाल चतुर्वेदी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन को केवल सक्रिय ही नहीं बनाया बल्कि स्वयं भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। इसके कारण उनको कई बार जेल जाना पड़ा। देश के हित के लिए जेल जाना यह उनके लिए सम्मान की बात थी –

“क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना।”

छायावादी हिंदी काव्य राष्ट्रीय चेतना से या मूलतः गांधीवादी विचारधारा से निर्देशित थी। महात्मा गांधी ने मशीनगनों के मुँह बंद करने के लिए सत्य अहिंसा का सहारा लिया था। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने 'पुष्प की अभिलाषा' में देश-प्रेम का भाव प्रस्तुत किया है –

" मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पाठ देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाते वीर अनेक।"

महात्मा गांधी के जीवन, विचारों और सपनों से केवल भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी लोग भी प्रेरित और प्रभावित हुए। माखनलाल चतुर्वेदी गांधी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ‘बापू के प्रति’, ‘एक तुम हो बापू,’ ‘ बापू तुम होते,' 'बरस दिन' तथा अन्य कई गीतों में गांधी के महान व्यक्तित्व और उनका कर्म साधना को रेखांकित किया है। गांधीजी के बाद वे जिन महान व्यक्तियों से प्रभावित हुए उनमें सबसे महत्वपूर्ण है

विनोबा भावे। विनोबा भावे की 'भूदान यज्ञ' को वे महत्वपूर्ण मानते हैं। गांधी के सपनों को साकार करने का सपना कवि विनोबा में देखता है –

"अब तो बापू के इन बोझों को,
ढोएगा सिर्फ विनोबा।
अब तप के लिए विनोबा है,
अपने तो पद है, सेवा है।"

खादी आंदोलन भी स्वाधीनता संघर्ष का प्रतीक था। कवि माखनलाल चतुर्वेदी खादी के कपड़ों को कलंकित करने वाले राजनेताओं की खबर लेता है –

" खादी के उजले कपड़ों से अपने पापों को मत ढाकों,
गंगा-जमुना और नर्मदा उबल उठी है भीतर झाँको।
मातृभूमि के तत्वों को अपनी सुविधा पर यो मत मारो,
वह क्या जुलुम की मतलब साधो बापू बापू व्यर्थ पुकारो।"

पंडित श्याम नारायण पांडेयजी ने अपने ओजपूर्ण, सरल, सरस वाणी से भारतीय जनता को जागृत किया। 'हल्दी घाटी' 'जौहर' तथा 'आरती' स्वतंत्रता के पूर्व की रचनाएं है। कवि भारतीयों को आर्थिक रुप से कमजोर बनाने के अंग्रेजों के षडयंत्र को विफल करने के लिए जनता को खादी पहनने का संदेश देते हैं–

" खादी पहनेंगे, मसलेंगे तुम्हें पैरों तले।"

छायावादी काव्यधारा के प्रमुख कवियों में से एक कवि सुमित्रानंद पंतजी गांधीजी के विचारों से काफी प्रभावित थे। वे जब छात्र थे तब से ही वे महात्माजी से प्रभावित हो गए थे। सन् 1922 में पंतजी एम.ए. कर रहे थे, उस समय महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन छेड़ा था। गांधीजी ने इस आंदोलन में सहभागी होने के लिए देशवासियों को पुकारा था, उनकी पुकार पर अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर आंदोलन में वे कूद पड़े। अपनी कविता में वे लिखते है –

“वह पहिला ही असहयोग था, बापू के शब्दों से प्रेरित,
बिदा छात्र जीवन के दे मैं, करने लगा स्वयम् को शिक्षित।"

पंतजी महात्माजी को देश के उद्धारक, मानवता के धरोहर मानते थे । वे कहते थे कि “बापू” ही सबके आदर्श हैं और वे ही मानवता के बंधन खोलेंगे ।

उपर्युक्त पंक्तियों में स्वतंत्रता प्राप्ति का भाव दृष्टिगत होता है। क्रूर ब्रिटिश शासन को समूल नष्ट करने का विद्रोही भाव भी गूँजता है। परंतु गांधीजी का प्रभाव वहाँ संयमित रूप प्रदान करता है।

पंडित राम नरेश त्रिपाठी ने महापुरुषों कि मुक्त कंठ से प्रशंसा कि है। सत्य, अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी जी से प्रेरणा लेकर उनके आदर्श गुणों को अपने काव्य में रेखांकित किया है –

" मैं अमर हूँ, मौत से डरता नहीं, सत्य हूँ, मिथ्या डरा सकती नहीं।
मैं निडर हूँ, शस्त्र का क्या काम है? मैं अहिंसक हूँ, न कोई शत्रु है।"
शस्त्र लेना निर्बलों का काम है, शस्त्र का तो शस्त्र केवल प्रेम है।
प्रेम से मैं भूमि, स्वर्ग, समुद्र को एक कर दूंगा, हृदय के रूप में।"

कवि को पूरा विश्वास था कि महात्माओं के पथ प्रदर्शन में चलकर देश आजाद होगा। महात्मा गांधी का अभिनंदन करता हुआ कवि कहता है –

"बन के मनुष्य बीच आप हो समा गया जो,
दिखलाया अपने विराट का विकास है।
जिसकी मनुष्यता की अमर कहानी आज

अक्षय विभूति-सी वसुंधरा के पास है।"
****

"भारत स्वतंत्र होगा, पीढ़ियां कहेंगे तब,
गांधीजी का चित्रित यही तो इतिहास है।"

हिन्दी भाषा के सशक्त हस्ताक्षर सोहनलाल द्विवेदी की कविता में महात्मा गांधी का प्रतिबिंब नजर आता है। वे केवल भारत के कवि ही नहीं बल्कि स्वतंत्रता सेनानी थे। राष्ट्रियता से ओतप्रोत कविताएं लिखने के कारण इन्हे राष्ट्रकवि की उपाधि दी गयी। तथा 1969 में उन्हे भारत सरकार ने पद्मश्री उपाधि प्रदान की। उनकी " लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती, कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती" कविता बहुत ज्यादा लोकप्रिय हुई। निम्न पंक्तियाँ सांप्रदायिक भेदभाव को मिटाकर बंधुत्व भाव को प्रस्थापित करने कि बात करती है—

"हिंदू-मुस्लिम, सिक्ख- ईसाई
क्या न सभी हैं भाई-भाई "।

जयशंकर प्रसाद राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के कवि है। देश के प्रति प्रेम उत्पन्न करने में उन्होंने प्रकृति का भरपूर मात्रा में उपयोग किया है। प्रस्तुत पंक्तियां जीवन की प्रफुल्लता, मधुमयता एवं विराटता को प्रस्तुत करती है –

" अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा"

डॉ रामेश्वर लाल खंडेलवाल 'तरुण' राष्ट्रप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी है। कवि ने देश प्रेम, त्याग, समर्पण, मानवता आदि भावों को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। वे क्रांतिदर्शी कवि है। उनके काव्य में हिंसा के स्वर नहीं बल्कि सत्य, अहिंसा तथा त्याग के स्वर प्रस्फुटित होते हैं –

" सुख से जियो और जीने दो यह उदार भावना यही है,
यहाँ आत्मबल पुण्य, किसी का पशुबल में विश्वास नहीं है,
तलवारों से नहीं जगत पर पाई विजय हृदय के द्वारा
महिमामाय है देश हमारा"

इस प्रकार गांधीजी से प्रभावित होकर कवियोंने राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कविताएं लिखी। इसमें अतीत भारत की गौरवमय झांकी है। राष्ट्रनायकों की वीरता और त्याग का चित्र है और गांधीवादी चिंतन है।

संदर्भ ग्रंथ -

1] संपा- प्रो नरेश मिश्र, आधुनिक हिंदी राष्ट्रीय काव्याधरा : राष्ट्रियता और मानवतावाद,
2] माखनलाल चतुर्वेदी, धूम्रवलय (काव्यसंग्रह)
3] माखनलाल चतुर्वेदी, कागज की पतवार (काव्यसंग्रह)
4] राजेश्वर चतुर्वेदी,महेंद्र कुमार, सुबोध हिंदी निबंध, एम. आई. पब्लिकेशन,आगरा, सप्तम संस्कारण

by Dr. Sangita Chitrakoti